HISTORY (H)
B.A. - III
PAPER - Vth
HISTORY OF INDIA (1550-1750)
UNIT - Vth. Urban centres.

C. Urban social structure.

⇒ नगरीय सामाजिक संरचना

⇒ व्यवसायिक गतिशीलता :-

मैक्स वेबर का तर्क है कि पूर्व औपनिवेशिक भारत में कोई अंतर-शिल्प गतिशीलता मौजुद नहीं थी। अगर कोई शहरी मध्य वर्ग के संदर्भ में यह तर्क देता है तो बेहतर रोजगार और बेहतर अवसरों की तलाश में इन शहरी वर्गों में अक्सर पेशे बदलने के उदाहरण देखने को मिलते है।

अकबर के काल में प्रसिद्ध कवियों में से एक बुखारी, एक अनाज व्यापारी (बक्काल) का पुत्र था, माहिम के पिता तीर बनानेवाले कारीगर (तीरगर) थे।

⇒ भौगोलिक गतिशीलता :-

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date:

यह पेशेवर वर्ग न केवल अपनी इच्छा से व्यवसाय में परिवर्तन करता रहा बल्कि बेहतर अवसरों की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर भी वे स्थानांतरित होते रहते थे। यातायात के अच्छे साधनों के अभाव के बावजूद व्यापारिक समुदाय एक शहर से दूसरे शहर जाते रहते थे।

बनारसीदास फतेहपुर के एक इलाके में रहनेवाले ओसवालों के एक विशिष्ट समुदाय का उल्लेख करता है। अभी भी कश्मीरी कटरा नामक एक अलग कटरा, शाहजहानाबाद के किले के दिल्ली गेट के नजदीक कश्मीरियों को समर्पित है। सूरत में खत्रियों की काफी आबादी है जो पंजाब से उनके उत्प्रवासन के सूचक हैं।

→ गुलाम और घरेलू सेवक-सेविकाएँ:

मुगलकाल तक आते-आते कुलीन गुलाम सैनिक, जो सल्तनत शासक वर्ग की एक महत्वपूर्ण ताकत थी, पूरी तरह से समाप्त हो चुके थे और गुलाम श्रमिक, श्रमबल के एक छोटे से घटक के रूप में

परिवर्तन हो गया जो मुख्यतः घरेलू सेवक और रखैल के रूप में सिमट कर रह गया।

अकबर ने गुलामों के व्यापार को अवैध किया और युद्ध बंदियों को जबरन दासतापर प्रतिबंध लगाया। 1582 में उन्होंने हजारों ऐसे गुलामों को मुक्त कर दिया। ऐसी ही स्वतंत्र गुलामों का एक वर्ग अकबर के व्यक्तिगत अधियारबद्ध अंगरक्षक और सहायक के रूप में कार्यरत थे जिन्हें "चेला" कहा जाता था। चेला, एक विशिष्ट श्रेणी के सैनिकों के रूप में औरंगजेब के शासन काल के दौरान भी वजूद में थे।

घरेलू दास और रखैल कुलीन घरों में और यहां तक कि छोटे अधिकारियों के घरों में बड़ी संख्या में सेवारत थीं।

गुलामों की एक अन्य श्रेणी ख्वाजसराओं (हिजड़ों) की थी। आमतौर पर वे महिला प्रतिष्ठानों हरम में पहरेदार के रूप में कार्यरत थी। ये चेला समुदाय से भिन्न थी और ख्वाजा और ख्वाजासरा के रूप में संबोधित

किये जाते थे। जहाँगीर के ख्वाजसराओं में ख्वाजा हिलाल इतना ताकतवर था कि उसने आगरा में एक आलीशान हवेली का निर्माण किया, खजटा नामक कस्बे की स्थापना की।

बेगार को अनैतिक माना जाता था। अकबर (1597) और शाहजहाँ (1641) ने समय-समय पर इस संदर्भ में घोषणाएं की। यह दिलचस्प है कि जब अकबर ने 1598 में श्रीनगर के नागर में अपने किले का निर्माण कराया तो उसने यहाँ लिखवाया कि इस निर्माण के लिए किसी श्रमिक से बिना मजदूरी के काम नहीं कराया गया।

DR. UDAY KUMAR.
DR. L.K.V.D. College Tajpur.

Scanned with CamScanner